

2826

Handwritten text in a cursive script, possibly a signature or a short phrase, located on the upper right portion of the document.

Handwritten text in a cursive script, possibly a signature or a short phrase, located on the lower right portion of the document.

ॐ नमः वक्रसखाय ॥ ॥ नागहनेवी ॥ गालरूपः ॥ मध्यमं नृमहान्तिकनकनादिगः पूर्वविदहृत्तलीवादि
पञ्चभूपनलांताय सिद्धनकनृखवनः पञ्चवर्ष्यं च दिनमापि यात्रः नमः पीचवृद्धं २ विष्णुं किं गच्छिष्यति
गच्छिष्यति पञ्चमूर्तिः ॥ ५ ॥ भूदृष्टिपानत्रवर्हि गिदिनमानसाः हनंगुह्यति मित्रघनधाननृपः ॥ ५ ॥ जागये
दमस्य यादुपदिपः नादुपदिपः पत्रिकां गुह्यनृखवनः २ स्वसननादुपदीपञ्चद्विदिगगुवनः वाडिदीपणी खिउपत्र
५ ॥ दिनदवरात्रायि यः नननृधित्रयावियः सफः भूशान्नचूवियात्र २ भूवननादुदिवियसायकः वक्रः महि
रूपनिधिमिलितैकदयनि ॥ ५ ॥ गुनूचनधगिवनसंलगति पत्रिणावनः मनकसुमउरूपन्नसंरुनिपूजा २ प्रह
वपत्रिणावनधिः सफः पत्रिपूत्रिणावनकलानिधितकलसगुरुगी ॥ ५ ॥ ५ ॥ नागपद्मीजलि ॥ गालमाथ ॥
भादिभून्पस्वलाय विष्णुः भूनिनभून्ननकलरुमिः सगवभनृभिखनसा २ सर्वमधुलसीस्थिती
२ जकताकिनी सर्वगगलाया पितः पूजितावज्ञाचार्य २ विंशितमानसाः वाधिस्रणावभनृस्तसिदि
प्रज्ञाता ॥ ५ ॥ तिसमाधियालागमिगविन्यास २ स्वस्वदवपत्रिपूजा ॥ कासूपाखानमः मयनृपः भू
दयनसवदिवात्र ॥ ५ ॥ विष्णुकलिसंमल्लगुंकालजायकूयमत्र स्वणाव २ विष्णुर्यैकमभ
दयनृपसर्वदवपत्रिसंस्थिती ॥ ५ ॥ गुनूचनधगिवनसंलगति पत्रिणावनः मनकसुमउरूपन्नसंरुनिपूजा २ प्रह
गुवनन्यापितगखस्वलावस्तुनिगनागगनत्रीष्ट ॥ ५ ॥ २ ॥ नागललि ॥ गालमाथ ॥ भूदृष्टिपानत्रवर्हि

[illegible]

वगनध्वनीया २ रुनयिवाद्यवज्जमवनमवयीलि ॥ कु ॥ ४ ॥ वागकुरुव ॥ दालमय ॥ गाकदहनयश्च
हानसवय २ यंवाभियात्रमयंत्रमात्रियुजिया ॥ दुष्कादववलिवायश्चिदुवनवीन ॥ वीवमवायकसमया नन्द
॥ कु ॥ वीवदिश्वत्रमरुजानन्द २ कत्रकमवासनदुदयानन्द ॥ कु ॥ यंत्रवद्वयंत्रस्वधहानसवय २ यवा
सवनवयमादितदुदया ॥ कु ॥ उं आ १ हूं कीं खं गं धनकवीन २ उमवयं लधनिवीवमानन्द ॥ कु ॥ ५ ॥
वागकुरु ॥ दालमाथ ॥ ऊयं वा द्रविदवीववदवीयत्रि २ मयत्रमवासरववनिनवत्र ॥ नरुगवकियादकमः
वमदिमधुक्त नडुवयनरुनकावा २ हाउमात्रआरुवधविरुषिक नायत्रयष्टुवावा किलिचिलिगिलयगिन
यलिनरुनाका ॥ कत्रमिखयत्रधत्रि मधुमात्रविरुषिक २ कल्वखद्वंगधत्रीमककशी ॥ कु ॥ गित्रमिमिध
वधत्रि विनयववगीता कसुत्रिकयत्ररुययीरुम्यावा ॥ कु ॥ रुनयिमवनवज्ज वाद्युतिदास्य २ युलमा
मिवदुयानिही रुदरुवयास्य ॥ कु ॥ ३ ॥ वागमधुमन ॥ दालमय ॥ शिवकनविगणिमधुलमायस्थि
नि आनन्दमवनिधवा २ वज्जवावाही आलिगलसमवत्रनानावमिमदादवा २ ननाहं २ ननाहं २ ननाने
नहं हना ॥ निलवर्णवकुवकुयनिमुखचिनरुवयत्रमानन्दमवनिधवा २ विश्ववज्जमधुनवकुवकुवा

यमकटधनदातु आरुचलमागालिका॥ कु ॥ वरुचलपुगजवर्ममित्रखदांगधन विवमानन्दमत्रकि
धवा२ कत्रकि कयात्रलयत्र सयागधत्र विष्टववम मित्रधवा॥ कु ॥ दिगीविदिगीकाकास्यादियमकाः
दियात्र सरुजात्रन्दमत्रकिधवा२ नमामित्रमामिणी वक्रत्र सवत्रगमयुत्रवत्रवद आत्राधिका॥ कु
॥ १ ॥ वागकैलव॥ दालदुर्मान॥ उं आ॥ हं हं हं अक स्वाहा॥ मनु विगयडवानत्र२ यूजायुक्ति
नयूजमकावमत्वययमात्ररुवकुत्र॥ स्वखादिखादिवलि यूजात्रयययाकय२ विष्टुत्रयवामियात्रमयथउ
सात्रिथ यं वरुन अत्रिना॥ २ सर्वयकवाकमरुमयमत्र यिसावायमात्राअयमात्र२ अकठाकिन्याः
दिअयुमागान्दं वलिष्टुद्रुव॥ कु ॥ समयात्रकुनुमाकसिद्धिं सखमयदविष्टुद्धिं२ यथेवः
यथेव कुजथयिनेथत्र डिष्टुथमाककर्मथत्र॥ कु ॥ दानयमिसर्वकथ्येसिद्धिं मनात्रथसर्वसख
यदमानि२ आसंसात्रकथगमवयन स्वदायकात्ररुवकुत्र॥ कु ॥ ८ ॥ वागकैलव॥ दालमंयु॥
विविहं विहन्नमात्रविगागिवदन२ दवन्नवअसत्रगलकुवनदुक्तुला नावयिन्नमामिणी सववदि
वा॥ २ कु ॥ वरुचालिनित्रकित्रमामत्रसर्गनावा नावयिन्नमामिणी सववदिवा॥ कु ॥

१ सप्तवक्त्रविनिर्वाहस्य विरुद्धिः गगनतुङ्गनिर्वहविवाहाः ५४

वज्रवादी आलिङ्गनकः १० शुभासदीपविश्ववत्समवसेनाशिवः ॥ ५५ ॥ गगनतुङ्गनिर्वहविवाहाः
क कनकावलीपरावरायनविस्तृतः ॥ ५६ ॥ चादशकुञ्जधरीवरादीवद्वन्द्वनीलमन्दारगगनतुः
ऊरीतः ॥ ५७ ॥ ॥ वागवह्वरी ॥ उक्तरीतः ॥ चक्रिकुञ्जकंठिवाचकमखवरुचिः श्रीवन्दुः
सुनतगिरिमाता ॥ २ ॥ जवहर्गिरिपुत्र दमावकाया युगनाथमदजडाला ॥ २ ॥ वज्रकवाचकदा ॥ ५८ ॥
याकं ॥ ५९ ॥ ॥ २ ॥ संपरओगिनीकमवविदामि गवा मदासखमदियुमाद ॥ २ ॥ वज्रवादी आ
लिङ्गलसंवत्तनाशिवद्विदुः ॥ २ ॥ वाहुतिवतयिचिदकिदवव अ ॥ ५९ ॥ ॥ २ ॥ ॥ सद्रुस
वृष्टिप्रेया गावककर्णगा रुद्रवववलयुमाद ॥ २ ॥ यद्वा आलिङ्गनद्वन्द्वनिवावर्ण विनामयिषुचकनृणा
॥ ६० ॥ ॥ १० ॥ ॥ वागवह्वरी ॥ दातमंय ॥ गजकिन्दुद्वन्द्व ॥ ५९ ॥ ॥ २ ॥ ॥ याकमवकनिगं श्रीगवावव ॥ २ ॥ ॥ ५९ ॥
वमिक ॥ ६१ ॥ ॥ १० ॥ ॥ वागवह्वरी ॥ दातमंय ॥ गजकिन्दुद्वन्द्व ॥ ५९ ॥ ॥ २ ॥ ॥ याकमवकनिगं श्रीगवावव ॥ २ ॥ ॥ ५९ ॥
यावित्रमाया सद्रुसमाकावमावविना ॥ २ ॥ यागवह्वरी ॥ दातमंय ॥ गजकिन्दुद्वन्द्व ॥ ५९ ॥ ॥ २ ॥ ॥ याकमवकनिगं श्रीगवावव ॥ २ ॥ ॥ ५९ ॥
अर्द्धवन्दुजटायुग यायुवर्ममडमडा ॥ २ ॥ आलिङ्गयुथारुवत वायविश्वव कालिवाहिरि नमडा ॥ २ ॥ निव

रुद्रिभवादिभक्तकनकामयचन्द्रमुखश्रुतिविक्रान्त २ शुभिसत्रिविधवन्दनायक विविधकर्मदाविन्दविभ
२ कनकलक्षणावावित्रविन्दवन्दुजयिसयवसंसावद ॥ ५ ॥ ११ ॥ रागधनापि ॥ दालकटि ॥ शवाकाक
मदासुरकुरयि चवृजानन्यथाकायलि २ विदुवनद्वित्रियाडमहासखवाया चन्द्रसूर्यडयमविद्या ॥ नयायली
नानयनवीना २ विदुवनचक्रसवृयिनी २ सर्वविकल्पविध्वंसनदवी अनुरक्तज्ञानदलदायलि ॥ ५ ॥
अमृतारुमपुलकदयास्थिति कल्याणलनीलवृयीनि २ कवकिलयवखद्योगधारी पुष्पाज्ञानदलदायलि ॥
५ ॥ दिग्वलनवायामककणि चक्रिकपुलकस्थिध्वनि २ मयलवाचक ॥ गारावा श्रीवन्दनलनित्रमाला ॥
५ ॥ सर्वमथागतजननिदवी विवेदिभक्तवअरावा २ श्रीवन्दयामिनी चवेलनित्रगक गावयिसमवस
वका ॥ ५ ॥ १२ ॥ रागरेलवी ॥ दालकटि ॥ नमामिनमामिजिनधुकरंनकचक्रुत्रमूर्तिआलिनिः
तायंनयानयंनधुसावृषवद्वधर्मआवयसावा २ ॥ ननाहं २ जगत्संसावदधवीयामनाहं नमस्तु २
देवजिनधवा ॥ २ नमामि २ श्रीमान्निगुवचव अद्विसिद्धितवदायलि इतिभक्तवन्दनसर्वयायकयंकवदा
नयन्यनुद्गमाक्यदा ॥ ५ ॥ राग ॥ दाल ॥ नमामि २ धर्मधुवाययन वाहुगदवावयत्रिः

मल्लिका २ बाउलगात्रलवृत्तार्त्ताकावा सर्वद्वयविमलिका २ ॥ कु ॥ लनाकाकनाविकाकनाका ॥ नमामि
२ बागीश्वरमधुनयमगितिनिमामिका २ सत्वविमादि रुद्रः खविनाशनयतमामिजिनवकुशवा ॥ कु ॥
॥ १३ ॥ बागमानव ॥ दालमा ० ॥ वडिलियातिवयात्रिवृत्तातिनी सिंधिलियायिनिर्जवकडवाकिनी ॥
नमामिपीआगाश्वरहानश्वरी २ तिलिनयदवीचिचुवनयविग ॥ कु ॥ पूर्वडरुवमधिमदक्रिलदिग
दवी २ जाकिनीधियिनी वडसिकंवाऊनि २ वडुवदिगुरुकादलनरुदवी २ तिलितिलिदवीनातयिदवीः
द्विद्वयवुक्ता ॥ नमामिगन बाउलआनिलीसमवर्माव ॥ कु ॥ १४ ॥ बागहेतवी ॥ दालइर्जमान ॥
मयकुरुवयावदिगंविदिगीचुवन धंसिवमात्रवडुवयन २ गगलालयव गगलरुनरुनकावा गगलदामव
वडुववुवाकिनी ॥ हं हं हं नमामियंवा २ जाकिनीयंवरुवकि ननजाकिनीयंवरुवगडागना ॥ कु ॥ पूर्वड
लवयचिमदक्रिलवडुचुवनविद्यनमावा विद्यनरंठिया २ वडजाकिनी धाववनात्रजाकिनी वंजावजः
किनीवडुवदवी ॥ कु ॥ सिंधिनीयायिनीर्जवकडवाकिनी खदांगयवगुंजीकगठुठदका ॥ कु ॥
जाकिनीधियिनीवडसिकंवाऊनी धावतंवायवकासवदनि ॥ कु ॥ जिनऊननिदवीजाकिनीरुह पुयि

समस्त यंत्रमूलांशुलरुचिन्या २ खड्गदृढकवजय ० खड्गगया २ युलमाभिद्वीधीहूनद्वी ॥ कु ॥ १५ ॥
 ॥ वामदक्षवामकि ॥ दान ॥ विषकमलगाणिमधुतवाडि न मोलिकल्लकधुलमनिरुधिना २ द्रविणवदन
 उलयवधविन ॥ नमामिद्वीविध्यायिना ननाकाननाकानददनाका ॥ कु ॥ जातमधुलरुयलवस
 मावा एष्टिकरुयलवली २ अष्टमलरुयड/खवितावनि ॥ रुमनिरुगनयवियालिना ॥ कु ॥
 सन्धविनिर्जिहडनेकिरीता दयासवनववन्दिना २ नमामिद्वीधीआयोनावा अनगविधुनिनवावः
 मी ॥ कु ॥ रुननिरुगनियवमादित्रविना किलिवकमआवय २ ऊवमऊवमधुलयादयनामिक ॥
 दानयगिधुलविहिक ॥ कु ॥ १६ ॥ स्नागल्लदी ॥ दाननकनवि ॥ दानगयावामनाखवन वडवि
 माकवडवदन २ रुलवकाविवाडि कनवायायि भादगऊवमधुल ॥ वावादिद्वीधुल्लिगल्लिक सं
 वनसवययमंहाना २ मलासहविलनलविवापयि युगनाथसंवववाया ॥ कु ॥ ऊकिनीनामाखधुनी
 दानयिनी वडयागनी २ वडवकवडयुगवडआनन्द वडकनवडसाधनक ॥ कु ॥ कायनाकविह
 दियवका आथजिलिवीवीस २ वाहिवज्जल्लकन वकल्लगवा ॥ यागिलीदिगविदिम ॥ कु ॥ काका

प्रादिअष्टद्वी नानात्रयीमाह २ यद्वयद्वयजागद्वय बालवनाउवलंतं ॥ कु ॥ वाधितकधर्मजाधनयि
यावधित्रयागिणीद्वय २ कवृषमाहद्वयनमकधीसेवत्र नावयि सरुजानन्द ॥ कु ॥ १० ॥ वाग
गावलिदाहवा ॥ टालमा ० ॥ सर्ववृद्धविवृद्धमात्रनितिवधदनिवृद्धनि २ वडमधुनवडयागिणी
हिकात्रधिवर्णीविवावना ॥ नमाभिवृद्धवासिद्धियागिणीगलमधुना २ अष्टविद्धिसर्वसिद्धियागिणी
विष्वमात्रयष्टिना ॥ कु ॥ आदितमधुल नऊसमत्रसदीयमात्रस ॥ गारिना २ वडिकुपुलकष्टिः
वावकुभखलविरुसिना ॥ कु ॥ कवृषियलमात्रवृद्धनि मककगदिगवना २ वडुमधुसदीग
धवि लालकिद्वरुयंकवा ॥ कु ॥ दुष्काद्वीनकनका सकवृषिययागिना २ दुष्काववनसि वः
गरुध्रिया अवधुवकर्तृयागावयिया ॥ कु ॥ १२ ॥ वागकात्रयियंत्रम ॥ टालऊटि ॥ द्रवधि
वमकूटकिवृषिमिलिरामिन ववलयुगा २ सादियवडुसल्लयवमवत्र यद्वयद्वय २ ॥ कु ॥
वाविद्वुलनवाविद्वुगुगनदद्वय २ ॥ कु ॥ गारसुनिवद्विधिक ॥ गारयद्वययुगा २
॥ कु ॥ ३ ॥ विद्वुवनकलितमवृषि अनवायनावनयवकि ॥ २ नावयिवडुसल्लयवमवत्र

लिनवकी ॥ २ वसिष्ठसुकी वलदशा सूर्यस्य लामवकी ॥ २ वडु विदुवय विस्वाव अनुगायन मख
वमी ॥ कु ॥ १२ ॥ वागमावपी ॥ दानकुटि ॥ धूमंगातिवन्द कलाति ॥ कीममर्षि गलक ॥ यि
या ॥ १३ ॥ सुश्रियाव दंड कलकलाति ॥ २ नानायाव वमदावतियव ॥ कु ॥ समयाव किं यो गां
वनीदवी ॥ २ वरुवि वरुवि वडु मख रुयाव ॥ कु ॥ निगर्क काव वरुवति ॥ गारा ॥ २ यष्टि कवक सम
कल रुयाव ॥ कु ॥ वीदमदावति यिधिवन गया ॥ २ मन्ममान्म वधिव आहाव ॥ कु ॥ २० ॥

१ वाग वाम कलि ॥ १४ वरु युरा वा ॥ १५ वरु रवना ॥ १६ कोलाडा ॥ नि ग नि वू व वयूरव
वरु ॥ जाडा ॥ कां ग युरा ग नि व ॥ १७ तलि ॥ कोलाडा ॥ मान्या नृ गा जा ॥ वाम कलियु वं ॥ जाडा
१८ यस्यान वरु गन्धयुरा कि गुनयुर्क कलियु रं यदि नानि ॥ १९ वामाद्याग ॥ २० वागयसमन वरु वयियति
षष्ठवर्क ॥ गीष्म गालय दिन ॥ २१ गीष्म कवसदृश राजनं संहि गने ॥ दत्तासं ध्यपु र क्ता मवरु वन गना
दियमाया गियानं ॥ यानया ॥ २२ ॥ सो वरु निल कं सु चि वं सु रुषा र क्ता ददनि विधि वरु रव
लू यमनू व्यासि हा सन पुवन विधि गले वरु य ससां नि वरु व ॥ २३ ॥ यषा सुव सिद्धि वद्य ॥ २४ ॥ त्वनय

१३ नमो साकनाथाय ॥ नमो साकनाथाय ॥ नमो साकनाथाय ॥ नमो साकनाथाय ॥ नमो साकनाथाय ॥
 साकनाथं नमस्कृत्य ॥ साकनाथं नमस्कृत्य ॥ साकनाथं नमस्कृत्य ॥ साकनाथं नमस्कृत्य ॥ साकनाथं नमस्कृत्य ॥
 वसुधावसुधा ॥ देवयानं देवगुप्तं सितसुखाया हावविष्ठा ॥ थथिष्ठा कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥
 नाहानयाई विष्ठाक ॥ थथिष्ठा कनूनामय ॥ १५ ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥
 हस्ता ॥ १६ ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥
 न ॥ यत्र स्थानं स विष्ठा हाव ॥ १७ ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥
 पूजनाय ॥ १८ ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥
 मस्कृत्य ॥ १९ ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥
 नमस्तुभ्यं ॥ २० ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥
 नमस्तुभ्यं ॥ २१ ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥
 नीलाकनाथं नमस्कृत्य ॥ २२ ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥
 नीलाकनाथं नमस्कृत्य ॥ २३ ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥ कनूनामय ॥

[illegible]

१ नागवसन ॥ ॥ न क व र्ग सु ला व ना ॥ ह्य न द हा व स ह सं ॥ न ल हा न वि
ह वि ता ॥ वि श्व ना र्थ ला क ष्व नं ॥ पु न मा मि शी द व ला क ष्व नं ॥ म इ त कु मि ता र सि त्र ध रं ॥ श्री जय
ला क ष्व न मां स त्र नं ॥ श्री ला क ना र्थ व पु न मा म्य हं ॥ प्रि ह व न प गि त व न रं ॥ ॐ ॥ त्वं श्री ला क ना र्थ ला क
उ ष्मि त्र ॥ त्वं ना र्थ भ स व व प ह न न ॥ ॐ ॥ त्वं ध र्म ना र्थ मां त्र कां क ला गि ॥ म द ४ र व षा वि ह न नं क
ला गि ॥ ॐ ॥ त्वं स त्र नं स व ला क हि ता र्थ ॥ म दा नि ड ४ र व नु सि क ला गि ॥ ॐ ॥ त्वं वि त्रिं कि ना रा
य न न म सु ॥ स व द व गं ध रं पु ज न ॥ ॐ ह म सु ॥ १ ॐ न म क ना र्थ यः ॥ १ ॥ ला क ष्व न नं मा
१ ॐ न मा दि पं क ना म ॥ १ ॥ म द ४ र व सु कृ मा ल वि वि गु प १ ॥ स गाल यं स ग न सं ष्य प त्रि क मा य
य ॥ ना य त दि पू ज रा ॥ ग य म रु नि क्ष नं ॥ त ना व नि प गि त र व र व ष्ट न स्य ॥ व स त्र या ॥ १
न किं चि द् द्रु द क वा य म व व ॥ ॐ गि त ल स क सु ग नृ नं ग था ॥ क री ति पा दी ॥ सु ग न स्य
१ ॥ द्रु या त न क व लं व म र्प गि सो न व ॥ ॐ वा य या ॥ २ ॥ सु पि त वा सा पि त रू मि म नृ ल ॥ य वि क
मा य मा र्थ पु क रा ति नि ल या ॥ ग था ग न स्या र्थ ग ॥ १ ॥ रु म स्य ॥ वा री ग म द्य न म हि रु ॐ ष्व नः ॥

पागासया ॥ ३ ॥ विकृतीतयनसपुष्पमाजका मृनिद्रसंघा र्थगता लमार्जत । रुवह्यो कान्ति ।
वपुधना ॥ वेगं पुं वृद्ध वृद्धं पुदं यथो सुधीः ॥ गायञ्जु कृतया ॥ ४ ॥ श्रीखण्डकृमसूत्रम्
रितवदनानि रुवेन्दु ते सगितका निसु वृद्ध सपुष्प यथापु वलिज गमातितका पुमह सा
दर्य ॥ यपयुधिय विसा नवः पके गंधया ॥ ५ ॥ काष्ठी वणालमृगाना रिसु गन्धद्रव्यं
य ॥ गतवपु सिपुगितय यनि । संपुद्धः वं विपुलं वसु गंधदह ॥ नषां वलिपव
मलग्नमलानि धनं ॥ नसा कया ॥ ६ ॥ यज्ञा प्रविगं सु कमात्र वासं संपादय ॥ ७ ॥
निरुगारत्नमयः ॥ रुय व काष्ठा समवाय रुथाः यथापु वलि दुवर्द वि ॥ त ॥ जजमया ॥ ८ ॥
रुमवाविजं विविधिपूर्व सुगंधयुक्तं गुदावितं सुमने साप्रतिपादय नि । अग्ने ग ॥ अस्वजा
तसासनसां धिकेत्यः यथापु वलि सुवराजम रुद्रुल स्त्रीः स्नानया ॥ ९ ॥ सांवाजिकं सहजं
वज्रधुपवास रुद्राद दानि सुगगायस सां धिकेत्यः ॥ यथापु वलि विपुलं वधन धन नमान्

संभूदमवाययदंरुत्तुजलरुनं॥ ध्यासया॥ ६॥ तुलार्थं कवयः अपनीतः यसां पि कलः पुः
गिया अदि यां संदं नीयानय ताहि वामाः रु वनु गदि वा सुखाय रोग्य॥ म नया॥ १०॥ धागुरु व गदि
लं वा वु गं वयन सादि कं॥ स्वं धमूलादि कं दान यः अयि न दं लं लं रु न॥ रुला रुलादि॥ ११॥ सु
॥ ११॥ तलं स्व रु सु ग च नायाः स्वादा वि नं य मुति वा निया गुं॥ द दानि सं द्यो य ग नः स्म मयः रु शु नः
रुया र्थ य दल रु न॥ सख न दान॥ १२॥ ला पु के य य क नं यो चि कं य व कं वः सम्यक् दानि व म सा
दिवि धान मु कं रु ग रु व व गि त्या रु वि सान मानं॥ स काय वा क्र म न सौ जिन सां थिक
॥ माः ध्याया॥ १३॥ यं वा मृ गे यं व सु गं ध व लं इ धी रु गेः कु लु स राज नाथेः॥ य नार्थ दानं प्र
काला मि सिं थः ग प्रा पु व नि रु म रु नि धनं॥ यं वा मृ ग खान या॥ १४॥ वी हिं व धा न्या द
मि स र्व जा गेः रु द्वा वि नं य यु द दानि सं थ॥ १५॥ रु लं ग रु रु व सु ति लः स र्व धु का मं समु
यं मि सं म्य क॥ वी हिं मा॥ १६॥ वि रु वा स र्व सं य ना स र्व व रु स म मि गं जिन स द्या य वा द
या न॥ ग रु ल रु रु ला पु या न॥ जा कि या॥ १७॥ व ल वा रु ना स य ना राजा रु व रु ध न धा
रु रु लु रु रु रु रु रु नि॥ ग वां का टि स ता नि व॥ का टि क न्या म रु दानं॥ पु न दानं वि रु व रु॥ जा कि॥

मि कः संधा स्याज्जनैदवा स वरु सुख सद्ग ॥ व न मया ॥ १० ॥ का गार व इ व रुल सुगाल
संयान नो गम मरि वं शुभायाः आसादि का मित्र सु ६ खि स वे कः शुभा मान मो लि निष प्रम
ना ॥ व न मया ॥ ११ ॥ य स न व र्मु म् इ या नि या दा म हा वलाः ॥ १२ ॥ हि व य धृ कः ॥ व लं पु
दा न व र्मु म् ल्याः सु उ य उ याः सुख मा यु व मि ॥ व क न मया ॥ १३ ॥ मा ह व्य ग्न व स व म
क मि कानि तं य व क र्मु तं तु ल स ह द क न व न म ग म्म द द मि स त त कि न स थि क य
स या यु व मि उ च त ल ग्म स वा ज ल क्मी ॥ नि स त्रा व या ॥ २० ॥ सो व र्मु उ य १ वि वि क रु क
मृ ल यं वा । सा यो द नं सु य वि य र्मु स पि रु या त्र ॥ र क्क द दा मि सु ग त य ग र्मा रु मा य । स्या ग
स्य य म्म स स मं द ल म य म य ॥ या ग या ॥ २१ ॥ न व्वा वि वा ग न व व दि रा वं । आ वा ग्य गा नि ह्य
म न न र्गा र्म । र व ल्मु धा त्र सु वि ग्म त व ग । र य क्क द ना ल ह त म नू यः ॥ इ ष ड्वा या ॥ २२ ॥ धि वा
वि नि त र्मु द वा न । वि र्मु स प न व दि वा न । सु ग्म वि य द न न । ना हि जा ना मि दु र्ग मि ॥ म नू य ॥
२३ ॥ द्वा य स न म न सा भु वि र्मु म नू य ४ सं द्यो य या न क व र्मु य दि ग्म नि का ल दि या र्ग ना य व न वा इ य
॥ गाय म्म र्मा क्क या यु व मि स व्वा म्म न दि य या न ॥ या न या ॥

॥ २३ ॥ कठिनिख कुरुगुं व ॥ अरुय नयय कृति ॥ विष्णु लब्ध यद्विद्यु र्गं ॥ जाय न यद्वि गामहा
ना ॥ सनामया ॥ २४ ॥ सोदत्रय सुमि सां नयसां न का नं ॥ दि द्यां गम हृदि हानविका सवकुं ॥ ग
मै नयं गग संयु नयु दानान् ॥ सा नय विवि धिहा गम महानि धनं ॥ मुखमि त्रया ॥ २५ ॥ यथा नून
रुतु द ॥ दक्षमयु यय कृति ॥ धर्मार्थ काम मा कुरु ॥ यायु वलिर कि मान स ॥ दक्षिण मया ॥ २६ ॥
उद्यान रुद्र मनाः यु दाना ज्य दः सला रिर विना धना यो ॥ सुसं स्मिताः पादयु गम हासा ॥ स्व
र्जन नु वा त्रि व त्रयायी ॥ त्र कामया ॥ २७ ॥ कुरु गुरु ताह वति जग तं मा गयु दाना ॥ कया नम्य वन्ति
सुवि नं ॥ हतया नाज न स्त्रीः ॥ धर्म स्त्रामि र वति नियतं ॥ सर्व सा कस्य ना ॥ आना सो ग कुरु गति ग
हनं ॥ त्रय दान ल ग ता री ॥ कसाया ॥ २८ ॥ रुना द हारः कठ केन न केः कयु त गा तं विधु
यताः वत नि स र्गः ॥ सुग न स्य मिष्या ॥ य दानि वि गुा ति विरु ष धानि ॥ शार वन मा ॥ २९ ॥ नाभि
वियं काम गि त स्य द हं ॥ न वायि ग सुं ननु व ज र्वं ॥ गमादि दान स र्गं ॥ मे गुा वि ला ॥ नयु कय
मिष र्गः ॥ गमादि ल गं ॥ ३० ॥ शजिन रु आह ॥ सर्व द द श्व र वति ॥ गुरु द त्वा ग ल्भ ल मा सर्व का

[illegible]

[illegible]



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

A detail of a manuscript page showing a single line of text in a highly stylized, cursive script. The ink is dark and the parchment is aged and yellowed.

॥ ७२ ॥

115

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

2826





१५ नमः श्री वक्रसंस्कारम् ॥ पुत्रवृद्धि पुत्रधर्म पुत्रसंघर्षार्थे वयः ॥ पुत्रवृद्धि वन
त्येव पुत्रसर्वे नमाम्यहं ॥ कर्मनः ॥ ॥ ॥ उर्व्ववक्रादकं अमृतं रुच्यं दुर्द्धं स्वाहा ॥
लं वलं मत्त ॥ उ यथा हि ज्ञानमार्गं ज्ञानादिना शुद्धं दिव्यं न वा विद्याः ॥ न त्वाहं
ज्ञाययिष्यामि वा ॥ शिवस्तुल्यं न हाय ॥ उ आः सर्वं न था ग ना हि वं कः समथ
शिद्धं ॥ ॥ नासि य ॥ उ अमृतं श्री वक्रं स्वाहा ॥ ३ ॥ नाहा वाय ॥ उ श्रीः स्वाहा ॥
क्रसहाय ॥ उ काय विष्णु मधनं स्वाहा ॥ ॥ पूजा रुच्यं लं र्वं हाय ॥ उ श्रीः रुच्यं
नीकृत्वाहा ॥ ० ॥ पूजा रुच्यं शिर्षं नय ॥ उ नमो रुच्यं वनं पूष्यं कं तु ना जाय न था

रु कनर्षं प्रह्लासुलंखा कला जगायावमिगाय कववरुगं कला मूनम्मिगुलं
रु वतिकन कवधूसवेना (गेविमूक) ४ सूत्रमनुज विस्तिर वल्लवदि फिका नि
धनकनसमृद्ध जायगे नाशवं (ग) सुगगववगृह्ण सिनु काय कस्मादि कला
उत्सलखर सर्वगथा गगाधिसु कुक्कलादा ॥ खाननस्य लाहाथनयक ॥ उवला
कि विमलखादा ॥ खानवलिसतय ॥ ॥ थनयान ॥ उमन्त्राभिधि नरु मिमथय
का ना दिवदुवी जसं जागं मला रुगं वा युग्मिजलावनी मधुलाय विरुका
माननं मत्रुमधु वल्लसि हासनकं यमवन्दगीवजसत्तदिह उ क सर्व

ॐ क व र्णं वज्रवज्र घष्ठा धनं विविज्जरुव हारु विनं गिवसि श्री वरध्वनिर्न
ॐ न नीलव र्णं र्णुको लालं कर्णं रुगवर्णं शुभ्ररुद्रावर्कं ध्यात्वा ॥ १ ॥
वज्रका कर्णं मयु लसर्गय ॥ ॐ श्री पुवनसुक्ता वायु शुभ्रवज्रसुक्ता रुद्रावका यया ध्या
यमना र्णोपगी कृत्वा हा ॥ ॥ हानवायु ॥ ॐ हं म (क्ष) म व व न म ॥ ॐ हं अ (क्ष) म व
व न म ॥ ॐ हं उ हं व व व न म ॥ मध्वा ॥ ॐ र्यं पू र्व विद हा य न म ॥ ॐ र्जं वा दीयाय
न म ॥ ॐ ल अ य न (ग) अ व ली या य न म ॥ ॐ र्जं उ रु व कू र्ज व न म ॥ ॐ या उ य दीया
य न म ॥ ॐ वा उ य दीयाय न म ॥ ॐ ला उ य दीयाय न म ॥ ॐ वा उ य दीयाय न म ॥ १ ॥
ॐ य गं रु व ल्ना य न म ॥ ॐ व यू र्ष व ल्ना य न म ॥ ॐ ल अ र्ष व ल्ना य न म ॥

ॐ वसुव नलायनमः॥ ॐ व्यावकु नलायनमः॥ ॐ वाखकु नलायनमः॥ ॐ लाम
धि नलायनमः॥ ॐ वासुव निधनं नमः॥ ॐ अरुं डायनमः॥ ॐ आसुय
नमः॥ ॐ श्रीवज्रसत्त्वयुवनमः॥ ॥ यूजायाय ॥ वज्रगन्धसाह ॥ वज्रसिद्ध
वायसाह ॥ वज्रयूथसाह ॥ वज्रधूपसाह ॥ वज्रनेत्र साह ॥ वज्रलाजायसाह ॥
वज्रनामूलसुगीच्छसाह ॥ ॥ वज्रक लख हायक नय ॥ ॐ अरुं गृहीमर्य
मन्त्रव तु दीयाय ॥ गिरिगं सफनर्तसमाकीर्त ॥ दद नूकवदायि ॥ यत्र
वृद्धधम्मसा ॥ संधय न गन्धेव य ॥ नियो नयामि हावन ॥ संपूर्ण वत्तमधुल ॥

थन गुरु या यश उँ आः ४ रुँ श्री मन् दद स ल्व यु नू व न च न ध क म ना य स म्ब क ह
ना व रा स न क ना य न मः ४ रुँ न म स्त म्भु न म म्भु न मो न म ४ ॥ रु क्ता रुँ ला न मः ४ स्था
मि यु नू ना र्थ प सि द्ध म ना य स प सा दा कि न ल्घा स्तु न ना त्म क ४ न ल्व न त्व प रा प्रा वि
क व प रु ना ध का ना ४ प ल्घा न ना वि न दृ गी ना द स मू र्ध्वः न सि नि म स्तु नि नी र्थ यु नू
रा स न क ना य रुँ ॥ ग उँ न मा वृ क्षा य यु नू व न मा ध र्मा य ना व लो न मः ४ सं द्या य म रु
रु म जि ह्वा पि स न र्ग न मः ४ स र्व वृ द्ध न म स्या मि ध र्म व जि न हा धि र्ग सं द्य क गी त सं
य न न ल्घ य न म स्तु र्ग १ न ल्घ य म ग न र्ध स र्व प नि दि आ म य अ नू मा द ड ग ल्घ र्थ

वृद्धवा (ॐ) द (यमनः॥ आ वा (ॐ) सर्वं यामि वृद्ध धर्मं ग (ॐ) कर्मं वा (ॐ) विष्णुं
कनाभं च स्वयं चार्थं यस्मि द्वयं उत्यादयामि वनवा विविष्णुं निमन्त्रयामि अहं स
विसृत्वा अष्टां व विष्णु वनवा विवा विधानां वृद्धा हव्यं जगता हिनाय दभना स
वया यानां यूष्मन्नां वानूमा दना कृणाय वासं क विष्णामि अष्टां अष्टां यथा धर्मा गण॥
थनया य दभना ॥ अनादि मृतमसा वं कर्म निष्क यवा यन उत्तम या पुस्त ना जार्यं कर्म का
र्यं मं ह्या कृष्ण मा विर्ग किं श्रीं आ गम वा गथा मोहनं सूर्यं दस यामि ॥ यथा गाय नः
गायि तु व त्रि या य का थो मा गा पि रुग्ण श मया गु वृष् अ न ख वा ख य वा का य वा वृद्ध व
वृद्ध धर्मं स य पूजा ॥ ॐ आर्य वेला व ना य स्वाहा ॥ ॐ अ की त्या य स्वाहा ॥ ॐ व त्ते हं ह वा य स्वाहा ॥
ॐ अ की त्या य स्वाहा ॥ ॐ अ मा य सि ह्य स्वाहा ॥ ॐ व ना य स्वाहा ॥ मा म कि य स्वाहा ॥ पा र्श्व स्वाहा ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

स्वप्नबद्धाष्टदशममयापापेननायका यगृकृर्गंदा नूनंयावर्गं नमो वन्दस्यान्यहं ॥
मया पापेनमूह्यतां स्कां विद्यापमागमर्गं पृक्त्वा यवसा वाक्कं यवसा यदम्यवद
नाम्ना पुपन पुनपुन अर्गं यमग्यं अर्हदकं मिदनाथनकग ययूनमया ॥ ५ ॥
वलि विरयं ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
यस्याहा ॐ कृव वा यस्याहा ॐ अग्रयं स्याहा ॐ वा ययं स्याहा ॐ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
स्याहा ॐ सुयोयगहा धिपगययः स्याहा ॐ वन्दायन कृणा धिपगययः नमः ॥

[illegible]

ॐ ह्रूं नूग वत् ॥ नमो ही क पावत् ॥ स्वा हा हूं गि वत् ॥ वा षट् हूं वा हा न पं ॥ हूं हूं
 हा ॥ मिषा नि पा ॥ ह्रूं ह्रूं ह्रूं ह्रूं अं अं गं न्यात् ॥ ह्रूं ह्रूं ॥ ० ॥ स्वयं वा हा धना
 ॐ वं नूग वत् ॥ ही था नूग वत् ॥ जी मा क ॥ ह्रूं ह्रूं क पावत् ॥ ह्रूं ह्रूं गि वत् ॥ ह्रूं
 ह्रूं ह्रूं ह्रूं ह्रूं अं अं गं न्यात् ॥ ह्रूं ह्रूं ॥ ० ॥ क वलं स्वयं हा यिका हा ग य ॥ ॥
 ॐ ही य वत् न का वा य ॥ अं वत् नूग वत् ॥ हा हा वत् ॥ हा हा वत् ॥ हा हा वत् ॥ हा हा वत् ॥ हा हा वत् ॥
 ॐ ॥ अं वत् नूग वत् ॥ हा हा वत् ॥ हा हा वत् ॥ हा हा वत् ॥ हा हा वत् ॥ हा हा वत् ॥ हा हा वत् ॥
 ॐ ॥ अं वत् नूग वत् ॥ हा हा वत् ॥ हा हा वत् ॥ हा हा वत् ॥ हा हा वत् ॥ हा हा वत् ॥ हा हा वत् ॥

ॐ संमय क वा ट क हं हू ट्वा हा ॥ ॐ वि संमय क वा ट क हं हू ट्वा हा ॥ ॐ संमय
वि संमय क वा ट क हं हू ट्वा हा ॥ पं वा प हा न पू जा लु ति ॥ ॐ श्री हू व क म हा वा
न वि शु । हू क लि लो म्भ नं त मा मि सर्व श वा ग्ध दा कि नी जाल सै व रं ॥ ॥ थ न जा
य या य ॥ ॥ पू जा या य ॥ ॥ व लि वि य ॥ ॐ न म श्री व क सै द ना य् सम य ह्म ज
४ हं वं हा ॥ ॐ स्व स्व स्वा हि २ स र्व य क वा क स रु न य न पि सा वा य स्मा नान् ॐ दै व
लि ३ गृ क्ता र हं हू ट्वा हा ॥ पू जा या य ॥ ॥ थ न व ह्नु म हा ला व न ये जा या य ॥
ॐ व ह्नु म हा वा स्व ना य या आ व म घा व म ध म र्घि नी कृ स्ता हा ॥ नै स्व कं व न य ॥

[illegible]

[illegible]

ॐ सूर्य दयाय ॥ नागसं ह वसं कासपय गसम हर्षं सकासावधमात्रुर्ध्वं वज्र
सूर्यो नमाम्यहं ॥ १ ॥ नाग र जीव ॥ जयं जयं वाचु लिङाय लक्ष्मि लो वै ॥ इत्यय इत्य सं हतन
॥ लं नरु नाल लो लो य प्रा तः ॥ नावधि मात्रमिल वा कूल रजि नयु दयानलं लं ॥ सयु मा नजि नजन
नीव जजो गानी र जय जय हो द शो ह नन धु स र कल गि क सात्र कल वा न नी र ज य जे य ॥ वृत्त सम स
नयि थि ॥ नृ य कू ठ ल न व सि य मा त्र र ज य जे य ग्रा ख ह ज ग त सं सा त्र ॥ पुन मामि श्रु द्य वा कू लि ॥
नाग ॥ हं हं हं हं हं हं ॥ सं सा त्र त नृ व र हं द श वि ग न जी न ध त्र ॥ ह व जा तु द्वा गे ना हं ॥ प्र
ह व जा तु द्वा गे ना हं हं ॥ ना ग न हं हं ॥ सु त्र न त्र व दि त च व न व र कू स म वि त्र य न जी ग ध त्र ॥
लो व वि म दू त वि स ह सं हा र ठ क्रा तु न ॥ को ति या त्र ॥ प्र ॥ न मा मि न मा मि श्रु व जा र ठ क्रा तु न
॥ यि थि या त्र ॥ प्र ॥ ना ग ना म ग्रा ॥ क ल मा थ ॥ म द नि ज न श्र मि वा य मं तु ल उ य मि त ग्री णु म ल र ना ना ॥

ललमयजातिनउ कितनजसंदृष्टं शुभम् ॥ ॐ ॥ नमामि नमामि श्रीगुरुवज्रसूत्रं ॥ नमो गुरुननिधिसाग
ना ॥ विश्वमाथ विश्व व्यापितं गुरु ॥ गुरु वनसंयुजिता ॥ ॐ ॥ शकासर्वं मुखनयनं गुरुविष्णु
ल ॥ वज्रं च अक्षरं कितकं गुरुवर्णं सुखं लक्षणं ॥ नलमकृतसिन्धु ॥ ॐ ॥ नलं च गुरुलक्षणं
वि वल ॥ सत्पुत्र्यं कसंस्तिता ॥ चतुर्विधं विदितं ज्ञानादि ॥ नलमकृतं सत्पुत्र्यं ॥ ॐ ॥ हि हि पुमादि
न वं विता सवज ॥ गुरुनि न ॐ नसिल ॥ लोदि सिद्धि व नयु दगा ॥ स रजिने नानर व पुदागा ॥ ॐ ॥
१ माग नाम कति ॥ ॥ कम न वि का सि ग सि ग वि वि अ स न ॥ कम दयिय व र्णु स म द हा ॥ चतु न व र्णु न
सं ॥ क व न य द ल स न ॥ न ग यु का सि ग ॥ न मा मि श्री गी म ह म ॥ श्री स क न ग न वा ज स व यु नू ॥ कम नि द
रु न झ न व ल पु द ॥ सु व र्णु न न नि वि सा ग ना ॥ ॐ ॥ यथ म क न द य अ लि ग व ज यं च म ड्या लि ग
न मा जि ग र दि ति य ॥ स व र्णु न य द न ल ॥ चतु र्थ र व स व र्णु न व ना ॥ ॐ ॥ उ र य र उ यो ग र व न
व र्णु म ड्या ॥ चतु र्थ र व स व र्णु न व ना ॥ ॐ ॥ उ र य र उ यो ग र व न
दि हा वि नि मि ग क ति ग ॥ स व र्णु न न नि वि र व पु द गा र ॥ स व र्णु न व न न मा ग ग व न मा र्थ व ज जं मा नि ॥ ॐ

१ॐ नमोस्तुते नार्थय ॥ त्वेता कथं गवर्तमा म्महं ॥ श्रीजिनप्रभुमिताहसितं धवा ॥ का के नामनि ॥
यत्तसु ॥ गतिना ॥ त्वं धर्मनार्थकवनामयाय ॥ १ ॥ यमसंस्तिगविनामनिहस्ता ॥ सर्वदवग
धवा मागयक ॥ त्विह वनश्रवयुजनाय ॥ त्वं धर्मनार्थकवृक्षमयाय ॥ २ ॥ त्वं वनवृक्ष
लाकडधायी ॥ त्वं युगनगनहकंददाति ॥ द्वातीसवकुलरासकवनेज ॥ त्वं धर्मनार्थकव
नामयाय ॥ ॥ मृगसमाधिहृदयधवा ॥ त्वं लाकनार्थसिंधुवसागवा ॥ त्वं गुर्वृक्षार्थकवृक्षम
याय ॥ त्वं धर्मनार्थकवृक्षमयाय ॥ ॥ मदात्रिदुःखहवनं कुतू ॥ मद्रुखं वयाधि
दवनं कुतू ॥ त्वं युगसामिषसुखददाति ॥ त्वं धर्मनार्थकवृक्षमयाय ॥ ७ ॥ सर्ववृक्षगना
मां वक्राकलाति ॥ त्वं स्यामिमां सर्वयावदवनं ॥ मज्जमज्जमसुखागयाफ ॥ ८ ॥ निगुमदायाव
लादिनेश्वरहृदावकस्यमनिहानधर्मदहासुवसाजसमाफ ॥

॥ क ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ क ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ क ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ क ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ क ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ क ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

